E learning Study Material
By Prof YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
VKS UNIVERSITY ARA BIHAR
BA PART TWO ECONOMICS HONS
PAPER THIRD

TYPES OF FARMING IN INDIA

प्रश्न- खेती की विभिन्न प्रणालियों तथा उनके गुण-दोषों की विवेचना कीजिए, भारत के लिए कौन सी प्रणाली उपयुक्त है ?

Farming is a process of growing Crops and raising livestock animals for food and other material. Farming has been the most beloved tradition followed for ages during the world for human survival.

भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन यहाँ विकसित देशों की तुलना में कृषि की प्रति एकड़ उपज बहुत ही कम है। इसके अनेक कारण हैं, लेकिन इन कारणों में भूमि का उपविभाजन एवं अपरदन अपरदन एवं खेती की पुरानी एवं अवैज्ञानिक पद्धति प्रमुख है। अतः भारत में कृषि की ऐसी व्यवस्था अपनायी जानी चाहिए जिससे इन कारणों का निदान हो सके और कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कई कदम उठाने

इसी साथ ही एक उचित कृषि व्यवस्था का चुनाव करना भी आवश्यक है। कृषि-व्यवस्था की कई प्रणालियाँ अथवा रूप या प्रकार हैं जिनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं —

1. कृषक ~~स्वामित्व~~ स्वामित्व की कृषि अथवा व्यक्तिगत कृषि (Peasant Proprietorship or, ~~Individual~~ Individual Farming);
2. पूँजीवादी कृषि (Capitalistic Farming)
3. राजकीय कृषि (State Farming)
4. सामूहिक कृषि (Collective Farming)
5. सहकारी कृषि (Co-operative Farming)

उपरोक्त कृषि प्रणालीयों की विवेचना इस प्रकार है —

1. कृषक स्वामित्व की कृषि :- जब किसान व्यक्तिगत रूप से अपनी सूझबूझ तथा साधनों द्वारा अपनी जमीन अथवा किराये की जमीन पर खेती करता है तो ~~[illegible]~~ कृषक स्वामित्व की खेती की कृषि अथवा व्यक्तिगत कृषि कहते हैं। खेती की इस प्रणाली में अपने कृषि कार्य में किसान पूर्णतः स्वतंत्र होता है और उन पर कोई बाहरी हस्तक्षेप नहीं होता है। भारत में प्रायः व्यक्तिगत कृषि का ही प्रचलन है।